धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मार्च 2009

* प्रतिदिन के जीवन में देवात्मा के अद्वितीय रूप की झलक
* जीवन का मार्ग
* स्वार्थ हिंसक बना देता है।
* नेचर के अद्भुत रूप
* जिंदगी की पाठशाला
* अण्डों के विषय में गल्तफहमियाँ
* ज्योतिष झूठ का पुलिंदा
* बहुत फर्क पड़ता है।
* माता – पिता संतान दिवस
* अपने हाथ में ही रहे हमारे जीवन की डोर
* चण्डीगढ़ में माता पिता सम्बन्धी विशेष सभा
* शुभ संग्राम

प्रतिदिन के जीवन में देवात्मा के अद्वितीय रूप की झलक

परम पूजनीय भगवान का देवरूप अद्वितीय है, जिसे हम उनकी शिक्षा, उनके भीतर जीवन के विकास की कथा से जान सकते हैं, परन्तु लगभग हम सबमें वह योग्यता नहीं, इसलिए उनके तीसरे पक्ष को जानने से हम उनकी महानता वा अद्वितीयपन की कुछ झलक देख सकते हैं।

तीसरा पक्ष उनके जीवन में घटने वाली छोटी-छोटी घटनाएं जो उन्हें मनुष्यात्माओं से अलग दर्शाती हैं, उनका ज़िकर करेंगे। सर्व प्रथम उनका जो प्रभावशाली व्यक्तित्व था वह कितना आकर्षक था जो सैकड़ों हज़ारों जनों में अलग दिखाई देता था, उससे इस क्रम को आरम्भ करते हैं। उनकी ऐसी घटनाएं श्री कनल जी ने और श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने और अन्य कुछ धर्म सम्बन्धियों ने लिखी हैं, जो हमारे लिए बहुत लाभदायक हो सकती हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अनोखा व्यक्तित्व :-

पूजनीय भगवान के शिष्यों वा कर्मचारियों के भिन्न, बाहर के वा कई दफा उनके विरोधी जन भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। बिना उनको जाने भी जब पूजनीय भगवान पब्लिक स्थानों से गुजरते तो कई जन अपने आप ही उनके आगे झुक कर प्रणाम करने के लिए मजबूर हो जाते थे।

एक जन ने कहा था कि यदि भगवान कहीं बहुत से जनों के झुण्ड में खड़े हों और एक बच्चे को भी यह कहा जाए कि इस झुण्ड का नेता कौन है, तो वह भी पूजनीय भगवान की ओर ही उँगली उठाएगा।

सक्खर के एक ईसारी प्रचारक ने अचानक गुरू महाराज को देखा तो पुकार उठे कि सचमुच ही देव समाज के बानी एक विशेष शख्सीयत के मालिक हैं। उनका रूप एक पवित्र पोप की तरह है। महात्रृषि दविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि "आप ब्रह्मो समाज के महात्मा हैं। पण्डित जी! आप पंजाब के गुरूनानक हैं" पूजनीय भगवान का व्यक्तित्व बड़ों-बड़ों की आंखें चौंधिया देता था।

बड़े-बड़े विरोधी भी उनके व्यक्तित्व के कायल हो जाते थे। Mr. D.N. बाली जो देव समाज के कट्टर विराधी थे, एक बार घोड़े पर सवार थे, पूजनीय भगवान के पास से गुजरने लगे तो बेबस घोड़े से उतरकर, उनके पांव छूने के लिए मजबूर हो गए। ऐसी अनेकों घटनाएं पूजनीय भगवान के आकर्षक व्यक्तित्व की हैं।

डॉ. चन्दुलाल जी पूजनीय भगवान को डाकुओं का सरताज कहते थे, परन्तु एक दिन बठिण्डा में जब पूजनीय भगवान रेलवे के एक शैड में अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे थे, तो उन्होंने पास से गुजरते हुए वहां खड़े होने की इजाज़त मांगी, उन पर ऐसा जादू हुआ कि वह अपनी पापमय ज़िदगी को छोड़कर सदा के लिए गुरू के हो गए और अपने ग्रह में पूजनीय भगवान को निमन्त्रित किया और घर की सीढ़ियों पर अपनी पगड़ी बिछा दी और प्रार्थना की कि पूजनीय भगवान उस पर चलकर उनके घर में प्रवेश करें।

पूजनीय भगवान के व्यक्तित्व के विषय में अगले अंक में और लिखेंगे कि कैसे उनके व्यक्तित्व में गज़ब का आकर्षण झलकता था।

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 3

मार्च 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

जीवन का मार्ग

हमारी धर्म समाज में जीवन के मार्ग का ज़िकर काफी आता है। बहुत से धार्मिक भजन भी इस प्रसंग को लेकर हैं।

जैसे :-

अन्धेरे में पड़ा रहता, न खुलता मार्ग जीवन का,
विपथ गामी हो मरता मैं, मैं क्या होता, कहां होता।

तुम्हारी ज्योति से हमरा, अन्धेरा दूर हो सारा,
जीवन की राह देखें हम, देव ज्योति, देवो जीवन।

जीवन ज्योति मुझे देकर, जीवन का उच्च मार्ग जो,
दिखाओ गर न तुम मुझको, कहां मेरा ठिकाना है।

प्रश्न उठता है कि जीवन का मार्ग क्या है? क्या कभी हमने इसे जानने की कोशिश की है?

यदि हमें जीवन मार्ग का पता भी लग जाए तो इस मार्ग का खुलना क्या है? क्या हमारा जीवन मार्ग खुल गया है कि नहीं? इस विवेक के साथ ही हमारे जीवन का विकास वा विनाश जुड़ा हुआ है। और इस विवेक के बिना हमारी बहुमुल्य हस्ती का विनाश निश्चित है। इसलिए जीवन मार्ग का विषय बेहद कीमती है, जिसकी ओर हमें ध्यान ले जाने की अत्यन्त अवश्यकता है।

जीवन मार्ग हमारे आत्मा की अवस्था से सम्बन्धित है जिसमें हमें अपने जीवन अर्थात् आत्मा के नाशक शत्रु स्पष्ट और गहराई में अपने जीवन नाशक के रूप में शत्रु नज़र आने लग जाएं।

मनुष्यात्माओं में जीवन नाशक महा भयानक, मृत्यु दायक नीच अनुराग हैं जो मोटे तौर पर निम्नलिखित हैं:- जो मनुष्य जीवन के बाधक हैं।

1) अहं अनुराग सम्बन्धी घमंड स्वार्थ, नीच घृणा, स्वेच्छाचारिता, मान, बड़ाई, प्रशंसा, ईर्षा द्वेष
2) धन, सम्पति और दुनियवी पदार्थ
3) काम वासना
4) मोह अनुराग
5) लोभ, लालच आदि

यह नीच अनुराग दिखाई देते हों और उन्हें खुराक देने वाले सामान वा सम्बन्धी भी उज्जवल रूप में दिखाई देते हों, वह अपने जीवन के लिए भयानक और मृत्युदायक, घृणित और विनाशकारी रूप में अनुभव होते हों, उनकी भयानकता का गहराई से आभास हो, जिन सौभाग्यवान जनों को

ऐसी अवस्था प्राप्त होती है, उन्हें ही जीवन का मार्ग दिखाई देता है या दे सकता है।

हमारा महा सौभाग्य है कि हमें परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सेवकी को ग्रहण करने का शुभअवसर मिल गया, जिसके साथ हमारी बेहतरी रक्षा और विकास जुड़ा हुआ है। इससे सेवक वा कर्मचारी मोटे पापों वा मिथ्या से किसी सीमा तक बच जाते हैं, परन्तु सेवकों को तो क्या अधिकतर कर्मचारियों को भी जीवन मार्ग का ज्ञान नहीं होता, अर्थात् अपने भीतर के मृत्युदायक, महा भयानक नीच अनुरागों से वह भी अकसर अनभिज्ञ रहते हैं। कई तो इन नीच अनुरागों को साधारण रूप में देखते है या उन्हें देख ही नहीं सकते और न उन्हें स्वीकार करते हैं। ऐसी अवस्था जीवन के विकास और विनाश पथ के प्रति अन्धता की अवस्था है। इस निम्न अवस्था से जीवन का नाश निश्चित है, और पूजनीय भगवान की सेवकी के महा सौभाग्य की बहुत बड़ी विफलता वा निरादर है।

जीवन पथ से अन्ध रहकर विपथगामी होना लाज़मी है "जीवन पथ से अन्ध रह, विनसित लाख करोड़" परम पूजनीय भगवान अपनी अद्वितीय ज्योति में इस मार्ग को दिखाते हैं, परन्तु उपरोक्त अवस्था रहकर उनकी ज्योति तक रसाई पाना महा कठिन है। यही कारण है थोड़ा सा भला पाकर सेवकों और कर्मचारियों का भी आत्म विकास का मार्ग रुक जाता है जीवन का मार्ग विकास का मार्ग है, यह एक खूबसूरत मंजिल है, जिसमें जीवन के नाशक शत्रुओं को देखना, उनसे मुक्त होना और इस अवश्यकता को तीव्रता से अनुभव करना निहित है। जीवन को बचाने का केवल मात्र यही मार्ग है।

परन्तु सेवकों और क्या कर्मचारियों के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति के क्रम में उपरोक्त नीच अनुराग हिमालय पर्वत की तरह विरोधक बने हुए हैं। जैसे एक बोतल में कार्क फंस जाता है, उसी प्रकार हमारे नीच अनुराग देव प्रभावों का मार्ग बन्द किए रखते हैं। यदि यह कार्क कुछ ढीला पड़े तो मनुष्य कुछ न कुछ देव प्रभावों को पाने और अपने आत्म हित के जीवन मार्ग को कुछ देखने का अधिकारी बन जाता है।

हमारे और नीच अनुरागों के भिन्न सबसे विनाशक और बाधाजनक अंह अनुराग है। प्रत्येक मनुष्य अंह अनुरागी है, यह मनुष्य की जन्मजात विरासत है। हमारी बदकिस्मती कि उमर के साथ, पद पोज़ीशनों के साथ, सफलताओं के साथ यह दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है। जितना अंह अनुराग हमारे भीतर अधिक होता है, उतना ही हम उससे मुक्त होने की भ्रान्ति के शिकार रहते हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के परम सौभाग्य थे कि उनके सिर पर परम पूजनीय भगवान देवात्मा विराजमान थे। आजकल इससे सावधान करने के हालात हमें नसीब नहीं। अब इस नीच अनुराग को देखना अति कठिन है। अपना आप ठीक, महान, सुन्दर, निर्दोष और बड़ा देखने से न अपने महा भयानक स्वार्थ, न घमंड, न गुस्से, न अपनी स्वेच्छाचारिता, ईर्षा, द्वेष जो अहं के मोटे-मोटे अंग हैं, हम देख सकते हैं, न उनका बाधक रूप नज़र आता है, अंह अनुराग के किसी अंश बोध की प्राप्ति के बिना, जीवन मार्ग दिखाई ही नहीं दे सकता। यह कैसे दिखाई दे और जीवन का मार्ग कैसे खुल सके, इसका अगले अंक में वर्णन करेंगे।

स्वार्थ हिंसक बना देता है।

बहुत दुख की बात है कि हमारे भारत वासियों में स्वार्थ इतना गहरा हो चुका है कि दूसरों के दुख दर्द वा पीड़ा का मामूली अनुभव भी अकसर देखा नहीं जाता।

पिछले दिनों विदेश में बैठे हुए यह ख़बरें देखने को मिली कि हमारी तेल कम्पनियों के कर्मचारियों ने अपनी मांगे मंनवाने के लिए हड़ताल कर दी। आज आधुनिक युग में जब आने जाने और काम करने के लिए, बच्चों को स्कूल जाने के लिए कितनी-कितनी दूरी प्रतिदिन तय करनी पड़ती है, ऐसे में इस हड़ताल ने सारा जीवन ही अस्त व्यस्त कर दिया। बड़े शहरों में जब लोगों के सारे दिन की थकान के बाद घर जाने का समय था, वह लम्बी-लम्बी कतारों में परेशान, बेहाल घण्टों खड़े हुए नज़र आ रहे थे। परन्तु हमारे स्वार्थी कर्मचारी उनकी तकलीफ से अनभिज्ञ अपनी मांगों पर डटे हुए थे।

आंकड़े बताए गए कि इन कर्मचारियों की तनख़्वाहें कुछ देर पहले ही लगभग दुगनी कर दी गई थी। अब वह सरकारी कर्मचारियों से बहुत अधिक वेतन पा रहे थे। परन्तु जैसे हिंसक जानवर के मुंह को खून लग जाता है, तो वह दूसरे का दुख नहीं समझ सकता, उसको चीर फाड़कर खा जाता है, वैसे ही हम मनुष्य भी हिंसक बन चुके हैं। ऐसी मानवीय पतित अवस्था पर आंसु बहाने के सिवा कोई चारा नहीं रह जाता।

परन्तु खुशी की बात है कि सरकार उनकी धमकी के आगे नहीं झुकी और उन्हें बिना शर्त अपनी हड़ताल वापिस लेनी पड़ी।

दूसरी हड़ताल ट्रक वालों की चल रही थी। यह सातवें दिन में प्रवेश कर गई थी। हर जरूरत की चीज़ मंहगी हो गई। बहुत हद तक इन हड़तालों में राजनैतिक पार्टियों का हाथ होता है, ताकि सरकार को किसी न किसी विरोधी हालातों में डालकर वह अपनी रोटियां सेक सकें। जनता कराह रही है, परन्तु हमारे ट्रांस्पोर्ट मंत्री के कान पर जूं नहीं रेंगी। पूछने पर उत्तर मिलता है कि मैंने अपने सैक्रेटरियों को उनसे बातचीत करने को भेजा था। जनता की आवाज है कि उन्होंने अपनी प्रतिनिधि उन्हें चुना है, न कि सैक्रटरियों को। मनिस्टर साहिब कई उत्सवों में भाग लेते दिखाए गए, जबकि घर-घर में मंहगाई से और सप्लाई न होने से हाहाकार मचा हुआ था। ऐसे स्वार्थी, दूसरों के दुख दर्द से लापरवाह नेता चुनकर हम भेजते हैं, तो हम भी अपनी जिम्मेवारी को ईमानदारी से नहीं निभा रहे।

हम उस देश के वासी हैं, जिसे आज़ाद करवाने के लिए गांधी जी ने लंगोटी पहन ली थी और जनता के एक आंसु पर वह दस आंसु बहाते थे। अनशन पर चले जाते थे।

जब भारत आज़ाद हो गया। 1947 में आज़ादी के कुछ दिन पहले, पंडित नहरू और सरदार पटेल का एक नुमायंदा गांधी जी को मिलने कलकता पहुंचा। जहां गांधी जी हिन्दु और मुस्लमानों के बीच शान्ति स्थापित करने का काम कर रहे थे। आधी रात को यह संदेश वाहक गांधी जी के पास पहुँचा। उसने कहा कि वह पंडित नेहरू और सरदार पटेल का एक महत्वपूर्ण

पत्र लेकर आया है। सबसे पहले गांधी जी ने पूछा कि उन्होंने खाना खाया है या नहीं। उनके नहीं कहने पर गांधी जी ने उन्हें खाना परोसा। उनको खाना देने के बाद पंडित नेहरु और सरदार पटेल का पत्र खोला, उसमें लिखा था, "बापू, तुम कौम के पिता हो। 15 अगस्त 1947 पहला आज़ादी दिवस है और हम चाहते हैं कि आप देहली आओ और हमें अपना आशीर्वाद दो।" गांधी जी ने कहा, "कितनी बेवकूफी है, जब बंगाल जल रहा है, हिन्दु मुसलमान एक दूसरे को मार रहे हैं, मैं तो कलकत्ता के अन्धेरे में उनके दुख की चीखें सुन रहा हूँ। मैं चमकती हुई रोशनियों में देहली कैसे जा सकता हूँ?" यह दिल को छूने वाले गांधी जी के शब्द थे। फिर उन्होंने कहा, "मैं यहां पर बंगाल में शान्ति स्थापित करने के लिए रह रहा हूँ, अगर जरूरत पड़ी तो मैं अपनी जान भी दे दूंगा, बशर्ते कि शान्ति और एकता स्थापित हो जाए।"

वह संदेशवाहक खाली हाथ सुबह रवाना हो गया, गांधी जी उसे छोड़ने गए, तो वृक्ष से एक सूखा पत्ता गिर गया। गांधी जी ने उसे उठाया और उसकी हथेली पर रखकर कहा, "प्यारे मित्र, तुम देहली वापिस जा रहे हो। मेरे पास धन दौलत तो है नहीं, यह सूखा पत्ता पंडित नहरू वा सरदार पटेल को दे देना, यह मेरा पहला आज़ादी दिवस का उपहार है।" जब वह यह शब्द कह रहे थे, तो संदेशवाहक की आंखों से आंसू गिरकर उस पत्ते पर गिर गया, तो गांधी जी ने मज़ाकिए लहजे मैं कहा कि यह आंसुओं से भरा पत्ता ले जाओ। यह शब्द उनके हृद्वय की पीड़ा को व्यक्त करते थे।

26-11 को मुम्बई आंतकवादी हमले की पीड़ा को पहली बार जनता ने गहराई से महसूस किया और राजनैतिक नेताओं की बोतली बन्द कर दी।

जब जन समूह दूसरों पर हो रहे अत्याचार अन्याय के विरूद्ध खड़े होंगे, तो हमारा समाज नया रूप ग्रहण करेगा। पक्षपात, जातिवाद से ऊपर उठकर समाज और देश का हित सोचना ही मानवता है। इसके लिए हमें अपने स्वार्थ छोड़ने होंगे। तमाशाई बनकर बर्बादी देखते रहना, दूसरों के दुखों को न समझना, दूसरों पर हो रहे अत्याचार और अन्याय की ओर से आखें बन्द रखना केवल अपने सुखों को मुख्य रखना, बर्बरता है, पशुपन है और मनुष्यों को हिंसक बना देता है।

अहंभाव स्वार्थ का उत्पादक
स्वार्थ भाव जीवन का नाशक
स्वार्थ तजो तब जीवन पाओ

सुरजीत बराड़

****

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

नेचर के अद्भुत रूप

सारा विश्व विविधताओं से भरपूर है। नेचर के विभिन्न रूप हमें देखने को मिलते हैं, कभी सर्दी है, कभी गर्मी है और कभी सुहावने मौसम का आनन्द प्राप्त होता है, गर्मियों में लोग पहाड़ों पर जाकर नेचर के नये रूप को देखते हैं, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, चश्में, ठण्डी हवा मैदान से बिल्कुल भिन्न वातावरण। सर्दी में पहाड़ों पर Snow Fall अर्थात् बर्फ पड़ती हुई देखने जाते हैं, जो बिल्कुल भिन्न और बहुत सुन्दर दृष्य होता है। इन सब बातों में मनुष्य का कुछ हाथ नहीं, यह नेचर का अपना सिस्टम है, बदलते हुए मौसम, उनके साथ ही बदलते हुए फूल पौधे, फसलें मन को मोह लेते हैं। यह तो हमारे देश का हमें अनुभव है।

सन् 2008 वा 2009 के शुरू तक मुझे अमरीका के तीन मौसमों को देखने का अवसर मिला। पहले गर्मियों में जब मई जून के महीने गर्मी की तपश बढ़ रही थी और घरों से निकलना मुश्किल हो रहा था, तो यहां पहुंचकर उस गर्मी से राहत मिली, बहुत ही सुहावना मौसम, चारों तरफ हरियाली, बड़े वृक्षों से घिरे हुए निवास स्थान, रंग बिरंगे फूलों की बहार, चारों तरफ ताज़गी ही ताज़गी। यहां तक कि सड़कों और बाज़ारों में भी जगह-जगह पर फूल। नेचर का वह रूप और उसमें मनुष्यों के द्वारा उसको और सुन्दर रूप दिया हुआ, ऐसा दृष्य जो बार-बार मन को प्रसन्नता से भर रहा था।

अक्तूबर मध्य में मुझे फिर जाने का मौका मिला, तो सारा रंग रूप ही बदला हुआ। सारे के सारे पेड़ों के हरे पत्तों ने अपना रंग बदल लिया। वृक्षों की कतारों की कतारें रंग बिरंगे पत्तों से झूल रही थी। पीले, गुलाबी, सुनहरे, कुछ हल्के रंग, कुछ गहरे रंग के पत्तों से भरे हुए वृक्ष बिल्कुल एक अद्भुत नज़ारा पेश कर रहे थे। घरों के अन्दर के वृक्ष सड़कों के दोनों ओर इतने सुन्दर रंग दार पत्तों से लदे हुए वृक्ष कि ऐसा मन करे कि सब को कैमरे में कैद कर लें। मैंने कुछ फोटोग्राफ लिए, पर उन्हें देख कर मन नहीं भर रहा था। घरों में, सड़कों में जो बाड़ें लगी हुई थी वह पूरी की पूरी रंगदार पत्तों से भरी हुई। कहीं केवल एक रंग, कहीं एक ही बाड़ में कई-कई रंग। इसको फाल का मौसम कहते हैं, जैसे हमारे पतझड़ होती है। मैं एक महीना रही, महीने के अन्त तक पत्ते गिरने शुरू हो गए। आंगन में रंग-बिरंगे पत्ते इतनी मात्रा में गिरते कि लगता कि रंग बिरंगी फर्श बनी हुई है। नेचर का यह अद्भुत नज़ारा देखकर मन सचमुच झूलने लगता था। ऊपर कमरों की खिड़कियों से नीचे गिरे हुए पत्तों की सुन्दरता और भी अद्भुत लगती थी। नेचर के इस रूप की सुन्दरता को इन शब्दों में बांधा नहीं जा सकता, वह केवल अनुभव करने की बात है।

अब पहली जनवरी को मुझे फिर अमरीका आने का मौका मिला, सब कुछ बिल्कुल बदला हुआ। सारे वृक्ष सूखे हुए, न केवल उनमें कोई पत्ता नहीं, बल्कि सूखी लकड़ियों की तरह दिख रहे थे। एक दो तरह के पौधे हैं, जो किसमिस टरी की तरह के हैं जो कहीं कहीं हरे दिखाई देते हैं, नहीं तो सब कुछ सूखा हुआ। सर्दी हमारे हिसाब से 20 और 30 डिगरी ज्यादा अमृतसर में कभी 1^0 सैलसियस तक हो जाती है, तो घरों से बाहर निकलना दूभर हो जाता है। परन्तु यहां पर आज मेरे लिखते समय -25^0 सैलसियस Temperature

है। यदि कार में कोई सब्जी रख दो तो वह Freeze हो जाती है। उसके साथ ही दो दिन इतनी बर्फ पड़ी कि जैसे बर्फ की बारिश हो रही थी। गर्मियों में हरा भरा, पतझड़ में रंग बिरंगे पत्तों की छटा, अब चारों तरफ बर्फ की सफेद चद्दर बिछी हुई है, एक फुट तक बर्फ है, जो कारें बाहर खड़ी हैं, वह दिखाई नहीं देती, मोटी बर्फ की परत से ढक गई हैं। घरों के जो दरवाजे ढके हुए, उसके भिन्न सब सफेद ही सफेद है। चारों तरफ दूर-दूर तक सफेदी के इलावा कुछ नज़र नहीं आता। वृक्षों की सूखी टाहनियों पर बर्फ ऐसे लटक रही है, जैसे उन्हें कोई सफेद फूल लगे, हों क्या अद्भुत नज़ारा है!

ऐसी भारी बर्फबारी में भी सुबह सात बजे लोग अपने घरों से निकल रहे हैं, देरी के डर से कई इससे भी पहले घरों से निकल पड़ते हैं, क्योंकि गाड़ियों की रफ्तार धीमी हो जाती है। सड़कों पर बर्फ पड़ने से पहले ही सरकारी गाड़ियां नमक छिड़क देती हैं ताकि बर्फ जल्दी पिघल जाए और आने जाने की तकलीफ घट जाए। स्कूल बसें समय पर चल रही हैं। किसी काम में रुकावट नहीं। नेचर का यह अद्भुत दृष्य मन को मोह लेता है। इतनी बर्फ से बच्चे और उनके साथ बड़े भी बर्फ इकटठी करके घरों के सामने आदमियों की तरफ बर्फ के आदमी बनाकर खड़े कर देते हैं और उनके गलों में मफलर बांध देते हैं, वह कई-कई दिन खड़े रहते हैं, क्योंकि सर्द हवाओं में बर्फ जल्दी नहीं पिघलती, ऐसे मौसम का भी यह लोग भरपूर आनन्द लेते हैं। इतनी अधिक सर्दी और बर्फ में सड़क पर कारों में जाने का अपना ही एक रोमांच है। ऐसा लगता है कि ऐसे सफर में चलते ही जाएं।

इससे आगे मनुष्यों के क्रिश्में हैं। हमारा देश भी विकास की ओर बढ़ रहा है, परन्तु इस देश का विकास हमारे से 100 वर्ष आगे है। गर्मियों में एक-एक स्थान पूरे का पूरा Air Condition है। घर, कारें, स्टोर, आफिस गर्मी की बजाए उल्टा अन्दर ठण्ड का अनुभव होता है और इस सर्दी में एक-एक चीज़ Centrally heated है। रिमोट से गैराज का दरवाजा खुल जाता है, किसी नौकर को आकर खोलने की जरूरत नहीं और आप अन्दर घर में गैराज के द्वारा घुस जाते हो। घरों के अन्दर का आलम यह है कि इतनी सर्दी और बर्फ में घरों के अन्दर आप गर्मियों जैसे कपड़ों में घूम रहे हैं। यह सब मनुष्य के दिमाग के क्रिश्में हैं। कारों की Heat चलने से कुछ समय पहले चला देते हैं, ताकि बैठने तक कार गर्म हो जाए।

कितनी ठण्ड हो, कितनी गर्मी हो, बिना किसी विशेष कारण के कोई न तो Duty से गैर हाज़िर होता है, और न ही लेट होता है। एक बूढ़ा 65 वर्ष का ड्राईवर जो हमारी बच्ची को स्कूल छोड़ता है, सुबह सात बजे इतनी बर्फ में दूर से आता है, आजतक एक मिन्ट के लिए भी लेट नहीं हुआ। माली का काम इतनी बर्फ में कोई नहीं, परन्तु वह अपने समय पर आकर और नहीं तो रास्तों से बर्फ उठा जाता है, परन्तु गैरहाज़िर कभी नहीं हुआ। कोई बहाने बाजी नहीं। अमरीका के लोगों का यही चरित्र उन्हें नम्बर वन बनाए हुए है। ऐसी कर्तव्य परायण कौम के आगे सिर झुकता है। इन दिनों जहाँ नेचर के विभिन्न रूपों ने मुझे बहुत गहराई तक प्रभावित किया है, वहां कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी डियूटी की पाबन्दी ने इस कौम के आगे झुका दिया है। हमारे देशवासियों ने पश्चात्य सभ्यता की गल्त बातों को तो अपना लिया है, परन्तु उनके गुणों को नहीं अपनाया काश! हम उनकी कर्तव्य निष्ठता से कुछ सीख सकें।

सुरजीत बराड़

जिंदगी की पाठशाला

मैं एक प्राईवेट स्कूल में शिक्षक हूँ। अचानक एक दिन पता चला कि मेरे विद्यालय में पढ़ने वाले दो बच्चों (भाई बहन) के पिता की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। बड़ा लड़का दसवीं कक्षा का विद्यार्थी था तथा छोटी लड़की छठी कक्षा में पढ़ती है। बच्चों के साथियों से पता चला कि बच्चों की मां भी किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थी और हाल में उनका भी ऑपरेशन हुआ था। इतना ही नहीं वह अभी भी जीवन-मृत्यु के बीच संघर्ष कर रही थी। एक तो बीमारी और ऊपर से यह सदमा जिससे कोई भी स्वाभाविक तौर पर टूट कर बिखर जाए। उनके घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी और किसी रिश्तेदार का भी सहारा नज़र नहीं आ रहा था। उस परिवार में कमाने वाला मुखिया बच्चों का पिता ही था और बच्चे अभी काफी छोटे थे। आय का कोई दूसरा जरिया भी नहीं था। हम सभी को उस परिवार से हमदर्दी थी, लेकिन हम समझ नहीं पा रहे थे कि हमें उनकी मदद किस प्रकार करनी चाहिए। विद्यालय के प्राचार्य काफी भले व्यक्ति हैं। उन्होंने सहानुभूति के तौर पर बच्चों की फीस माफ कर दी। इसके अतिरिक्त भविष्य में किसी भी प्रकार का कोई शुल्क न लेने का निर्णय लिया गया। इस घटना ने सहसा मुझे कुछ अवश्य प्रभावित कर दिया था। मैं जब भी कक्षा में उन बच्चों की मासूमियत देखता, कई प्रकार के विचार मस्तिष्क में घूम जाते। इतनी कम उम्र में बच्चों के सिर से पिता का साया उठ गया और उनकी मां भी इस हालत में नहीं थी कि बच्चों को सहारा दे पाती यह सोचकर मन रो उठता। एक दिन विद्यालय के प्राचार्य ने मुझे अपने एक ऐसे निर्णय से अवगत कराया जिसने मानवता का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया था। उन्होंने उन बच्चों के मृतक पिता के मित्रों से सम्पर्क किया और सर्व सम्मति से निर्णय लेकर एक समूह बनाया गया। इस समूह द्वारा सभी ने कुछ न कुछ राशि एकत्रित कर उसे छोटी लड़की के नाम से बैंक में जमा करा दिया ताकि उसके विवाह के समय तक जमा धन राशि काम आ सके। यह एक ऐसा कदम था जिसने न केवल उस परिवार को, बल्कि समाज को भी एक नई दिशा दिखाई। उनकी इस महानता ने मुझे नतमस्तक कर दिया था। जहां मैं इससे भाव विभोर हो रहा था, साथ ही इस घटना ने मुझे भी अपना तुच्छ सा योगदान करने की ओर प्रेरित कर दिया। प्राचार्य का मानना है कि भले ही हमने यह छोटा कार्य किया है, परन्तु इसका संदर्भ बड़ा है, क्योंकि इससे समाज में एक जागृति आएगी। लोग यदि एक दूसरे के लिए इसी प्रकार की सहयोग भावना रखें तो समाज में तेजी से आई अराजकता में कुछ परिवर्तन किया जा सकता है। मुझे लगने लगा कि वास्तव में निःस्वार्थ मानवता आज भी जीवित है। महापुरुषों के आदर्शों पर चलने वाले लोग आज भी हैं। सोचता हूँ इन्सान इस प्रकार के कार्यों से इस धरा पर ही स्वर्ग बनाने में सुक्षम है। मृत्यु तो एक सच्चाई है, लेकिन जब नेचर के बनाए घटनाचक्र में इन्सान अपनी इन्सानियत प्रस्तुत कर दे तब वह कार्य अद्वितीय बन जाता है। आज जब भी उन बच्चों को देखता हूँ, स्वयं में एक सुखद संतोष अनुभव करता हूँ। उस घटना ने मुझे बहुत कुछ सिखाया जिसे मैं आज भी अपने जीवन में उतारता हूँ। जब कहीं किसी को मुसीबत में देखता हूँ तो हाथ अपने आप मदद के लिए उठ जाते हैं। श्रेष्ठ जीवन मार्ग पर चलने वाले जो अपने कार्यों द्वारा मानव जीवन को नया संदेश देते हैं, उन्हें नमन करता हूँ। सच कहूं तो यह एक ऐसा कदम था जिसने जीवन की दिशा ही बदल दी।

सुनील कुमार निखिल

अण्डों के विषय में गल्तफहमियाँ

आधुनिक अध्ययन इस आम विश्वास को चुनौती देता है कि अण्डे में उच्च कोटि के पोषक पदार्थ हैं। अब प्रश्न यह है कि अण्डे खाने किस कदर उपयोगी हैं।

भारत में 1950 में अण्डों का प्रयोग करने वाली जनसंख्या 5 लाख थी, आज यह 10 करोड़ है, यह सरकारी आंकड़े बताते हैं। हमारी शाकाहारी समाज में 50 वर्ष में 36 प्रतिशत अण्डों का प्रयोग बढ़ गया है।

इसमें National Egg Cordination Committee द्वारा प्रचार का बहुत बड़ा हाथ है। यह व्यापार को बढ़ाने के लिए किया जाता है। यह प्रचार अण्डा खाने के लिए इसलिए प्रेरित करता है, क्योंकि इसमें पोषक पदार्थ बहुतायत में बताए जाते हैं।

दवाईयों और पोषकता के क्षेत्र में जो विज्ञान मूलक अध्ययन हुए हैं, उनकी ओर हम कुछ ध्यान दें तो सत्य को अच्छी प्रकार जान सकते हैं। एक विज्ञापन में बताया गया है कि अण्डे पोषक पदार्थों में, कई प्रकार के लवणों में, विटामिन में और प्रोटीन में अग्रणी हैं।

अण्डे के पोषक तत्वों में प्रत्येक सौ ग्राम में 13.6 प्रतिशत प्रोटीन है जिसमें 13.3 प्रतिशत वसा अर्थात् Fat है, जबकि दाल में 24 प्रतिशत प्रोटीन 1. 3 प्रतिशत वसा है।

अण्डा प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत नहीं है, जो शरीर को बढ़ाने में प्रयोग होता है।

दूसरा यह कहना कि अण्डे विटामिन के स्त्रोत है, यह भी झूठ है।

एक अण्डे में विटामिन A 1200 IU है। जबकि धनियां की पन्तियों में 10,000 से 12000 IU जो सस्ते भी हैं और पोषक भी। पत्तेदार सब सब्जियों में A विटामिन वर्तमान है। गाजरों में बेटा करोटीन बिल्कुल कुदरती रूप से वर्तमान है।

अण्डों में विटामिन डी है, यह भी कहना गल्त है। विटामिन डी हमारी शरीर के भीतर हमारी त्वचा के नीचे सूर्य की रोशनी से बनता है। सूर्य की धूप हमारे देश में अधिक मात्रा में मिलती है। हमें खाने के द्वारा लेने की कोई अवश्यकता नहीं।

अण्डों में विटामिन बी कहना भी ग़ल्त है। यह विटामिन हमारी स्नायु प्रणाली के लिए अवश्यक है और यह पानी में घुलनशील है। B6 B12 साधारणत: दलिया, सीरियलज़ और कुछ सब्जियों में होते हैं, जबकि यह अण्डे में नाम मात्र है।

खमीरी हुए भोजन डोसा वा इडली आदि में विटामिन बी बहु मात्रा में होता है। अण्डा दालों के मुकाबले में महंगा है, और अण्डों से कई प्रकार की हानियां हैं, जबकि दालें सदा ही उपयोगी हैं। दाले कोलैस्ट्रोल और वसा से भी मुक्त हैं।

एक सौ ग्राम अण्डे में 400 - 500 Mg. कोलैस्ट्रोल है, जो खतरे की मिकदार तक है, जो दिल के दौरे के लिए जिम्मेवार है। इसके साथ और Strokes होते हैं और दिल की धमनियों को भी प्रभावित करता

है। जबकि एक कप दूध में 5 मि. ग्राम, 100 ग्राम मास में लगभग 125 Mg. कलोस्ट्रोल होता है।

आधुनिक अध्ययन के अनुसार एक अण्डा खाने से 5Mg. कोलैस्ट्रोल खून में जमा हो जाता है।

यह भी प्रमाणित हो चुका है कि 200 - 250 से अधिक कोलैस्ट्रोल दिल का दौरा वा Strokes के लिए जिम्मेवार होता है। और भी दिल से सम्बन्धित बिमारियां होती हैं। इस प्रकार चाहे कितने भी विज्ञापन इसके लाभों के विषय में आएं, परन्तु वैज्ञानिक रूप से सेहत के लिए यह बेहद हानिकारक है।

इसके भिन्न अण्डे में वसा Saturated Fat प्रोटीन के बराबर ही होती है, यह हृदय की धमनियों में कोलैस्ट्रोल के जमने में मददगार होता है। एक और खोज के अनुसार अमीनोएसिड, जिसे मैथोनाईन कहते हैं, जो दिल का दौरा पड़ने में जिम्मेवार बनता है और विटामिन को हमारे शरीर से खत्म कर देता है, यह मास की तरह अण्डे में भी पाया जाता है।

इसके बाद प्रत्येक अण्डे की ऊपरी सतह में 25000 से 30000 तक माइक्रोपोरज़ होते हैं। (बहुत छोटे छिद्र) जिसके द्वारा बच्चे को आक्सीजन मिलती है। यदि इन्हें 30^0 से ऊपर के तापमान में रखा जाए तो 48 घण्टे में अण्डे खाने के योग्य नहीं रहते, इसलिए इन्हें फ्रिज में रखना अवश्यक है, परन्तु हमारे शहरों, कस्बों में कैसे रखे जाते हैं, यह सब हम जानते हैं।

हमें भोजन में कार्बोहाईड्रेट और फाईबर की अवश्यकता है, अण्डे में यह नहीं होते इसलिए उनकी Calorific Value अनाज के मुकाबले बहुत कम है। 100 Gms. मूंगफलियों में 549 कैलरीज़ होती हैं जबकि 1 अण्डे में 170 कैलरीज़।

अब एक और खतरा बढ़ गया है, पोलटरी फार्मज़ में मुर्गियों को ऐंटीब्यौटिक, हार्मोनज़ वा उनको शान्त रखने की दवाईयां दी जाती हैं, जो अण्डों के द्वारा मनुष्यों के भीतर जाती हैं। इसलिए अण्डे खाना बेहद खतरनाक है।

(Human Health Welfare Organisation के सौजन्य से।)

जीवन प्रंसग

1) उस समय के रिवाज़ के अनुसार (अमेरीकी शहर) में लिंकन और उसके राजनैतिक प्रतिद्वन्दी एक जिले में DE BATE के लिए इकटठे यात्रा कर रहे थे। बग्घी लिंकन के विरोधी की थी। "जब वे दोनों एक किसानों के समूह से मिले, तो लिंकन ने कहा "मैं इतना अधिक गरीब हूं कि बग्घी नहीं ले सकता। परन्तु मेरे मित्र ने फराख़ दिली से अपने साथ यात्रा का निमन्त्रण दिया है।" मैं चाहता हूं कि आप लोग चाहे तो मुझे वोट करें, और यदि न चाहें तो मेरे विरोधी को वोट दें, क्योंकि वो एक बढ़िया भद्र व्यक्ति है।

2) सन 1925 में जार्ज ब्रर्नाड शा को नोबल पुरस्कार दिया गया। उन्होंने इनाम तो स्वीकार कर लिया; परन्तु पुरस्कार से सम्बन्धित मिलने वाले 8000 पौंड लगभग 5/6 लाख रू० स्वीकार नहीं किये। शा चाहते थे कि यह राशि स्वीडन के गरीब लेखकों को दी जाए।

ज्योतिष झूठ का पुलिंदा

(पिछले लेख तो आगे)

प्रिंस चार्ल्स :- महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के बड़े पुत्र प्रिंस चार्ल्स राजघराने के उत्तराधिकारी हैं। वह 1981 में डायना से शादी के बाद भी बड़े चर्चित रहे हैं। डायना से उनके सम्बन्ध कभी ठीक नहीं रहे। डायना की बाद में मृत्यु हो गई थी। 2005 में प्रिंस ने अपनी पुरानी मित्र कैमिला से शादी कर ली थी।

देखते हैं ज्योतिषी प्रिंस के बारे में क्या कहते हैं। 14 नवम्बर, 1948 को लंदन में पैदा हुए चार्ल्स की जन्मपत्री ब्रैंड डेलसन के नाम से दिखाई गई।

दिल्ली का ज्योतिषी बताता है, महिलाओं से प्रेम संबंधों के बावजूद वैवाहिक जीवन ठीक रहेगा। व्यापार सामान्यता अच्छा चलेगा।

जम्मू का एक भविष्यवक्ता बताता है, व्यापार और नौकरी साथ-साथ चलेगी। इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक सामान का व्यापार होगा, आर्मी, परिवार पक्ष से आय होगी, 3 बच्चे होंगे।

जम्मू का ही दूसरा ज्योतिषी कहता है, राहुचंद्रमा का योग बीमार रखेगा, सरकारी मामलों में खराब, सूर्य समस्याएं बनाए रखेगा। प्राईवेट जौब होगी, राजनीतिक या उच्च पद का योग नहीं है। 2013 के बाद राजयोग, पत्नी और बच्चों से सामान्य संबंध।

डा. फारुख अब्दुल्ला :- यह एक जानेमाने राजनीतिबाज हैं। 21 अक्तूबर, 1937 में जन्मे अब्दुल्ला की जन्मपत्री लोकेश कौल के नाम से दिखाई गई।

जम्मू के ज्योतिषी ने कहा, राजनीति में कोई स्कोप नहीं, राजनीति अकसर गंदा खेल माना जाता है इसलिए जातक की जन्मपत्री में जूपिटर की स्थिति इस की इजाजत नहीं देती।

दिल्ली का ज्योतिषी बताता है, सूर्य के कुप्रभाव के कारण खराब रेपुटेशन उच्च प्रशासनिक जौब पर राजनीति में सफलता नहीं।

गोकुल का ज्योतिषी बताता है कि उच्च पद विशेष तौर से वकील, जज, संतान में लड़कियां ज्यादा होंगी, वीनस और मंगल के कारण खराब चरित्र।

जार्ज डब्लू बुश :- 6 जुलाई 1946 को जन्मे अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश टेक्सास के गवर्नर भी रह चुके हैं। जनवरी 2001 में वह राष्ट्रपति चुने गए थे। 2004 में वह दोबारा चुन लिए गए। पत्नी लौरा बुश और 2 पुत्रियों के पिता बुश का वैवाहिक जीवन खुशहाल माना जाता है।

उन की जन्मपत्री ब्रायन एडवर्ड के नाम से दिखाई गई तो जम्मू के ज्योतिषी ने बताया, व्यापार में कुछ परेशानियां रहेंगी पर व्यापार ही बेहतर रहेगा, राजनीति में कामयाब नहीं, 2 शादीयां होंगी, दूसरी शादी अक्तूबर 2007 से मार्च 2008 में होगी।

दिल्ली के ज्योतिषी का कहना है, श्वास संबंधी बीमारी होगी, पत्नी नहीं रहेगी, सिंतबर 2006 से अगस्त 2009 तक अच्छा समय, राजनीति में सफलता नहीं, मैंटली कन्फ्यूजड। जालंधर के ज्योतिषी ने कहा, मशीनरी और पार्ट्स संबंधी मैकेनिकल जौब, वैवाहिक जीवन दुखद, पहले तलाक के बाद शीघ्र ही दूसरा तलाक।

शंकराचार्य श्री जयेंद्र सरस्वती :- 18 जुलाई, 1935 को इरुलनिकी, तमिलनाडु में जन्मे हिंदू धर्म के दक्षिण भारत में स्थित काची कामकोटि पीठ के 69वें शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती आज हिंदुओं के लिए बड़े सम्मानित शख्स जाने जाते हैं। नवंबर 2004 में उन्हें पीठ के मैनेजर की हत्या के षड्यंत्र के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। बाद में सुप्रीम कोर्ट

ने उन्हें सुबूतों के अभाव में जमानत दे दी थी।

जयेंद्र सरस्वती की जन्मपत्री गजेंद्र अय्यर के नाम से दिखाई गई। दिल्ली के ज्योतिषी ने बताया, किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं, दुखी वैवाहिक जीवन पर तलाक नहीं, संतान से थोड़ा लगाव रहेगा। दिल्ली का ज्योतिषी बताता है, जातक बदजबान, भावुक व अहंकारी, राजनीति में सफलता संभव, पुत्र से लगाव। गोकुल का ज्योतिषी कहता है, समाज से सम्मान नहीं, पत्नी का स्वास्थ्य खराब।

इन के अलावा रिसर्च बुकं में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, राहुल द्रविड़, सत्य सांई बाबा, सचिन तेंदुलकर, सलमान रुश्दी, शिल्पा शेट्टी आदि की जन्मपत्री बना कर दूसरे नामों से ज्योतिषियों को दिखाई गईं। इन में किसी भी ज्योतिषी की कोई भी बात सच दिखाई नहीं दी। दरअसल, सब जानते हैं कि ज्योतिष की भविष्यवाणी हमेशा गलत ही साबित होती है फिर भी लोग इसलिए इस झूठ के पिछलग्गू बने हुए हैं क्योंकि इस पर हमारा परिवार और पूरा देश विश्वास करता है।

"ज्योतिष अपने आप में अंधविश्वास है"

राकेश आनंद

लेखक, अभिनेता राकेश आनंद अपनी रुचि के लिए भविष्यवक्ता बनने चले थे पर जब उन्होंने ज्योतिष विद्या पर काम शुरू किया तो उन्हें वांछित नतीजा नहीं मिला। ज्योतिषीय गणना के फार्मूले कसौटी पर स्टीक उतरते नहीं लगे। ज्योतिष में अनेक संभावनाएं विद्यमान नज़र आई। उन के ज्योतिष गुरु भी शंकाओं का समाधान नहीं कर पाए तो उन्होंने इस पर शोध करने का विचार बनाया। यहां पेश हैं उन से की गई बातचीत के अंश:

ज्योतिष को आप किस तरह परिभाषित करना चाहेंगे?

यह एक फेथ है, एक होप है। कमज़ोर दिल, दिमाग के लोगों को एक सहारा चाहिए। यह वह सहारा है। अंधविश्वास का सहारा, ज्योतिष महज अंधविश्वास है।

आमतौर पर लोग ज्योतिष की बातें गलत होने पर चुप बैठ जाते हैं। आप को इस पर रिसर्च का आइडिया क्यों आया?

जैसा कि मैं ने ज्योतिष को जांचापरखा तो मुझे लगा, यह अपनेआप में अंधविश्वास है। भविष्यवाणी तो दूर की बात है, ज्योतिषी जन्मपत्री के आधार पर किसी का भूत एवं वर्तमान तक नहीं बता सकते। जिन सितारों को व्यक्ति के भाग्य पर असर डालने वाला बताया जाता है वे विज्ञान की खोज के अनुसार वैसे कुछ नहीं हैं, फिर वे कैसे मनुष्य के जीवन पर अच्छा या बुरा प्रभाव डाल सकते हैं। मैं ने सोचा, इस अंधविश्वास के प्रति लोगों को जागृत किया जाना जरूरी है। रिसर्च शुरू करने निकला तो ताज्जुब हुआ कि हमारे यहां एंटी एस्ट्रोलोजी की एक भी पुस्तक नहीं है। उल्टे ज्योतिष सिखाने वाली अनगिनत पुस्तकें बाजार में भरी पड़ी हैं। बाद में पश्चिमी विद्वानों, शोध कर्ताओं से सहायता मिली।

जब आप को रिसर्च से पक्का यकीन हो गया कि ज्योतिष विद्या झूठ है तो आप ने क्या किया?

मैं 100 से अधिक एस्ट्रोलोजरों को कई जन्मपत्रियां दिखा चुका था। उन में सभी गलत निकली। मैं ने खुद देश भर के ज्योतिषियों के पास पैसे देकर जन्मपत्रियां दिखाई थीं। असलियत सामने आने के बाद स्थानीय मीडिया, अखबार और लोकल केबल पर ज्योतिषियों को चेतावनी दी कि वे परीक्षण के लिए आगे आएं, सही भविष्यवाणी कर के खरा उतरने वाले को 1 लाख रूपया इनाम दिया जाएगा पर अब तक केवल 2 लोग आए और वह भी परीक्षण के लिए तैयार नहीं हुए। प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया के लोग चीख चीख कर दावा करते हैं कि समाज से या देश से

संबंधित कोई खबर है तो उन्हें बताएं। फरवरी 2008 में मैं दिल्ली में 2 हफ्ते रहा। सारे राष्ट्रीय टीवी चैनलों के लोगों से व्यक्तिगत रूप से एवं फोन पर बात कर के अपनी रिसर्च के बारे में बताया एवं उन से निवेदन किया कि अपने चैनलों पर ज्योतिष का पाठ पढ़ाने वाले ज्योतिषियों को मेरा चैलेंज दें कि वे मेरी रिसर्च को झूठा साबित करें लेकिन एक भी टीवी चैनल ने मेरी बात नहीं सुनी।

इसके अतिरिक्त अपनी पुस्तक की कापियां मैं ने व्यक्तिगत रूप से प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, शिक्षा मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, सोनिया गांधी एवं डाक्टर कर्णसिंह को भी दी। आप समझ सकते हैं कि मैं ने अपनी तरफ से कितने प्रयास किए हैं। सच्चाई को जनता के सामने लाने का दंभ भरने वाले प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने इस बारे में कुछ भी नहीं किया। जोकि मेरे लिए बहुत ही ज्यादा दुख एवं आश्चर्य की बात है। सरकार चलाने वाले लोगों ने भी इस बाबत कुछ नहीं किया। जब किसी देश की मीडिया एवं सरकार ही सच का साथ नहीं देगी तो उस देश का क्या हो।

आपका मकसद क्या है?

अगर हमें किसी चीज़ का पता चलता है, ऐसा अंधविश्वास जिस से पूरी दुनिया परेशान है, लोग इस के नाम पर मानसिक तौर पर ब्लैकमेल हो रहे हैं। जैसे किसी को ज्योतिषी ने कह दिया कि तुम्हारे लिए आने वाले 6 महीने खराब हैं तो वह 6 महीने सोच सोच कर वाकई परेशान रहेगा। तब मैं ने सोचा पुस्तक लिखनी चाहिए ताकि लोग जागृत हों। मैं अब इस के खिलाफ अभियान छेड़ना चाहूंगा।

आप को ज्योतिष की सचाई का पता चला तो आप इसे पेशे के तौर पर अपनाने के बजाय लोगों को इस अंधविश्वास से बाहर निकालने के लिए सक्रिय हो गए, क्या बाकी ज्योतिषी सच को जानकर भी लोगों को लूट रहे हैं, बेवकूफ बना रहे हैं?

यह बहुत दिलचस्प प्रश्न है। मुझे लगता है कि अधिकतर ज्योतिषी (अपने ही अंधविश्वास और पूर्वाग्रहों के चलते) यह जानते हुए भी कि कहीं न कहीं ज्योतिष में कुछ गड़बड़ है, ज्योतिष में विश्वास रखते हैं। जिन लोगों पर उन का तीर व तुक्का लग जाता है वे लोग बारबार उन के पास आते हैं और ज्योतिषी को यह भरोसा बना रहता है कि ज्योतिष में सचाई है। हां, काफी ज्योतिषियों को यह भान हो जाता है कि ज्योतिष में कोई सचाई नहीं है लेकिन अब वे यह धंधा छोड़ नहीं सकते क्योंकि इसी से उन्हें सारा धन, मान और यश मिल रहा होता है। नतीजा, अंत में लोग ही बेवकूफ बनते हैं।

इस अंधविश्वास को खत्म कैसे किया जा सकता है?

जब तक हम खुद इस पर रिसर्च नहीं कर सकते तब तक इसे बढ़ावा ही मिलेगा। मैं चाहता हूँ 10 - 15 सेलिब्रिटी की कमेटी बनाई जाएं, इस में अमिताभ बच्चन, कपिल देव, सुनील गावस्कर जैसे लोग हों, ये जनता को बताएं कि अंधविश्वास खत्म करें। बारबार बोलें, आप इस के बाहर निकलें। केवल सरकार और प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया (टीवी चैनल) ही असल में किसी भी देश से अंधविश्वास, चाहें तो एक संस्था बना कर लोगों को जागरूक कर सकती हैं व सरकार पर दबाव बना सकती हैं कि वह अंध विश्वास विरोधी कानून बनाए ऐसा होने पर प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया अंधविश्वास बढ़ाने वाले प्रोग्राम न बना कर अंधविश्वास दूर करने वाले प्रोग्राम बनाएगा। मेरी कोशिश होगी कि मैं कुछ जानीमानी लोकप्रिय हस्तियों को ऐसी कोई संस्था बनाने का अनुरोध करूं। आगे उन पर निर्भर है। मेरे से तो जितना हो सकता है, मैं प्रयास कर ही रहा हूँ।

(सरिता से साभार)

बहुत फर्क पड़ता है।

न्यूयॉर्क की एक टीचर ने एक अनूठा काम किया। उन्होंने हाईस्कूल में अपने हर सीनियर विद्यार्थी का सम्मान किया और उन्हें बताया कि उनके होने से टीचर को कितना फर्क पड़ता है। उन्होंने डेल मार, कैलिफोर्निया में रहने वाली हेलिस ब्रिजेस की प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए क्लास के हर विद्यार्थी को एक-एक करके सामने बुलाया। सबसे पहले तो उन्होंने हर विद्यार्थी को बताया कि उसका मन पर और क्लास पर कितना सकारात्मक प्रभाव पड़ा। फिर उन्होंने हर विद्यार्थी को एक नीला रिबन दिया, जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा था, 'मेरे होने से फर्क पड़ता है।'

इसके बाद टीचर ने एक क्लास प्रोजेक्ट करने का फैसला किया। वे यह देखना चाहती थी कि महत्व मिलने के एहसास का लोगों पर क्या असर पड़ता है। उन्होंने हर विद्यार्थी को तीन रिबन दिए और कहा कि वे बाहर जाकर किसी को सम्मानित करें और सम्मान की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाएं। विद्यार्थियों को बाद में यह पता लगाना था कि उनके दिए रिबनों से किसने किसका सम्मान किया था। उन्हें एक सप्ताह बाद इस प्रोजेक्ट की रिपोर्ट क्लास में देनी थी। उस क्लास का एक लड़का एक कंपनी के जूनियर एग्जीक्यूटिव के पास गया। उस एग्जीक्यूटिव ने लड़के के करिॅअर की योजना बनाने में उसकी मदद की थी, इसलिए लड़के ने उसे सम्मानित करते हुए उसकी शर्ट पर एक नीला रिबन लगा दिया। फिर लड़के ने जूनियर एग्जीक्यूटिव को दो और रिबन देते हुए कहा, 'हम स्कूल में एक प्रोजेक्ट कर रहे हैं। आप भी किसी का सम्मान करके उसकी शर्ट पर एक नीला रिबन लगा दें। इसके बाद आप उसे बचा हुआ नीला रिबन दे दें, ताकि वह किसी और व्यक्ति का सम्मान करके इस प्रक्रिया को आगे बढ़ा सके। फिर मेहरबानी करके मुझे परिणाम बताएं।'

जूनियर एग्जीक्यूटिव उसी दिन कुछ समय बाद अपने चिड़चिड़े बॉस से मिलने गया। उसने अपने बॉस के सामने बैठकर उन्हें बताया कि वह उनका बहुत बड़ा। प्रशंसक है और उन्हें रचनात्मक जीनियस मानता है। यह सुनकर बॉस बहुत हैरान रह गए। जूनियर एग्जीक्यूटिव ने उनसे कहा कि क्या वह उनकी जैकेट पर नीला रिबन लगा सकता है। उसके हैरान बॉस ने कहा, 'हां, हां, क्यों नहीं?' जूनियर एग्जीक्यूटिव ने अपने बॉस की जैकेट पर उनके दिल के पास नीला रिबन लगा दिया। फिर उसने उन्हें एक और रिबन देते हुए कहा, 'क्या आप मुझ पर एक एहसान करेंगे? मैं चाहता हूं कि आप किसी का सम्मान करें और उसे यह रिबन लगा दें। जिस लड़के ने मुझे रिबन दिए थे, वह स्कूल में एक प्रोजेक्ट कर रहा है। वह इस सम्मान समारोह को आगे बढ़ाकर यह पता लगाना चाहता है कि इससे लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है।' उस रात जब बॉस घर गया, तो उसने अपने 14 साल के बेटे को अपने सामने बैठाया और कहा, 'आज एक बड़ी अजीब बात हुई। आज तक जूनियर एग्जीक्यूटिव ने आकर मुझे बताया कि वह मेरा बहुत बड़ा प्रशंसक है और मुझे रचनात्मक जीनियस मानता है। जरा सोचो! फिर उसने मेरी जैकेट पर यह नीला रिबन लगा दिया, जिस पर लिखा है, 'मेरे होने से फर्क पड़ता है।' उसने मुझे एक और रिबन देकर कहा कि मैं किसी और का सम्मान करके उसके सीने पर यह रिबन लगा दूं। आज जब मैं कार से घर लौट रहा था, तो मैं सोचने लगा कि इस रिबन से किसे सम्मानित करूं। तभी मेरे दिमाग में तुम्हारा विचार आया। मैं तुम्हें सम्मानित करना चाहता हूं। 'मैं बहुत व्यस्त रहता हूं और घर लौटने के बाद भी तुम्हारी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे पाता हूं। कई बार मैं तुम पर चिलाता भी हूं कि तुम्हारे स्कूल में अच्छे नबर नहीं आए और तुम्हारा बेडरूम कितना गंदा है, लेकिन आज रात को मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि तुम मेरे लिए कितने महत्वपूर्ण हो। तुम्हारी मां के अलावा तुम मेरे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो। तुम बहुत अच्छे लड़के हो और मैं तुमसे प्यार करता हूँ।' हैरान लड़का सुबकने लगा और सुबकता ही रहा। वह चुप होने का नाम नहीं ले रहा था। उसका पूरा शरीर थरथराने लगा। उसने अपने पिता को देखा और आंसू छलकाते हुए बोला, 'डैडी, मैंने कल आत्महत्या करने की योजना बनाई थी, क्योंकि मुझे लग रहा था कि आप मुझसे प्यार नहीं करते हैं। अब मुझे ऐसा करने की जरूरत नहीं है।

माता – पिता संतान दिवस

11 जनवरी 2009 की खिली हुई दोपहर में टैगोर थियेटर में चण्डीगढ़ कोंचिग सेंटर के विद्यार्थियों और स्टाफ ने मिलकर एक अनूठा समारोह आयोजित किया - 'मात पिता संतान दिवस। इस समारोह की अध्यक्षता पंजाब युनिवर्सिटी के वी. सी. श्री आर. सी. सोबती साहिब ने की।

कार्यक्रम की शुरूआत एक हृदय स्पर्शी गीत से हुई जिसका मकसद माता पिता के प्रति कृतज्ञता की भावना जगाना था। गीत के बोल थे। "कैसे माता पिता के उपकार सुनाऊँ मैं।

मुख्य अतिथि श्री आर. सी. सोबती का मानना था कि "माँ बाप का कर्ज एक ऐसा कर्ज है, जिसे व्यक्ति कभी नहीं अदा कर सकता। व्यक्ति का असली व्यक्तित्व उसकी माता पिता के प्रति भक्ति और उनके ऋण की अदायगी से माना जाता है। एक विद्यार्थी की सफलता से उसके अध्यापक या माता पिता से अधिक किसी को प्रसन्नता नहीं होती। हमें अपने देश की परम्पराओं को बचाना है.....।"

इस उपलक्ष्य पर डा. खेड़ा ने श्री सोबती को एक लाख रुपये का चैक Vice Chancellor's Relief Fund के लिये देकर सम्मानित किया।

स्टेज पर बच्चों ने अपने माता पिता को फूलों के हार पहनाकर सम्मानित किया और दण्डवत प्रणाम किया।

देवधर्म से जुड़े हुए आध्यात्मिक तथा सामाजिक कार्यकता श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय पर अपने भाव व्यक्त किये। उन्होंने माता पिता और बच्चों के आपसी संबंधों में गिरावट आने के कारणों को उजागर करते हुए इस बढ़ती हुई बीमारी का सही इलाज भी बताया।

इसके बाद एक सामूहिक गीत "माँ बाप का दिल न तुम यूँ दुखाओ" ने सबकी आँखें नम कर दी।

सेंटर के विद्यार्थियों रमनदीप एवं सोना ने बताया कि किस प्रकार भगवान देवात्मा माता पिता एवं बच्चों में आदर्श संबंध स्थापित करने में सहायक होते हैं।

माँ को समर्पित हिमाचली गीत
ने सबका दिल छू लिया।

कोचिंग सेंटर की शिक्षक श्री अश्विनी ओहरी द्वारा निर्देशित नाटक एक कोशिश.... में कोचिंग सेंटर के छात्रों ने सबको अपने अभिनय से मंत्र - मुग्ध कर दिया। नाटक के जरिये दिखाया गया कि माँ बाप और बड़े भाई बहन किस तरह छोटों के लिए त्याग और कुर्बानी की मिसाल बन जाते हैं।

"माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे, नक्शे कदम पर गुरू के अपने चला करेंगे".... बोल वाले इस अति भावुक गीत ने सबको प्रेरणा दी।

कोचिंग सेंटर के छात्र - छात्राओं उनके अभिभावक गण और कई जानी मानी हस्तियों से खचाखच भरे टैगोर थियेटर में पैर रखने की जगह न थी। चार घण्टे तक चलने वाले इस कार्यक्रम में दर्शक बंधे बैठे रहे। कई ऐसे छात्र और छात्राओं ने भी भाग लिया और स्टेज पर एक्ल गीत गाए जिन्होंने कभी स्टेज पर पहले आने की हिम्मत भी नहीं की थी।

माता पिता ने डा. खेड़ा द्वारा विद्यार्थियों में

अच्छे मूल्य और संस्कार पैदा करने के प्रयास की बेहद सराहना की। उनका मानना था कि आज के Materialistic Environment में बच्चों पर शिक्षा के अलावा इस क्षेत्र पर ध्यान देना बहुत जरूरी है तथा डा. खेड़ा का प्रयास ही अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

छात्र आशुदीप के पिता हरकीरत सिंह ने भी अपने अनुभव Share किए और बच्चों को माँ बाप का सम्मान करने की शिक्षा दी।

अंजना नाम की छात्रा ने एक बहुत ही धार्मिक गीत पेश किया जिसके बोल थे - 'माँ प्यारी माँ, गोद में तेरी खेला बचपन मेरा.....।'

अंत में डा. खेड़ा ने सबका धन्यवाद किया बच्चों में बादाम बाँटे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब तक हम समाज में अपने बड़ो, विशेषकर माता पिता के प्रति सम्मान और आदर की भावना नहीं पैदा करते तब तक सच्ची खुशियाँ और सुख नहीं पा सकते। उनके द्वारा सुनाई गई कहानी "एक गिलास दूध ने सबके हृदय को छू लिया।

अपने हाथ में ही रहे हमारे जीवन की डोर

जिंदगी का भरपूर लुत्फ वही उठा सकता है जो अपनी आकांक्षाओं को मनमुताबिक आसमान दे सके।

आकाश में लहराती हुई रंग बिरंगी और तरह - तरह के आकार वाली अनेक पतंगों को देखकर आप कैसे बताएंगे कि किस पतंग का मालिक कौन है? इस प्रश्न के कई उत्तर होने के बावजूद सही उत्तर तो एक ही होगा, और वह यह है कि 'जिस पतंग की डोर जिसके हाथ में होगी, उस पतंग का वही मालिक होगा। जरूरी नहीं कि जो पतंग मेरे सिर की सीध में आकाश में मचल रही है, वह मेरी हो।

मित्रो, आप इसे इस तरीके से सोचकर देखें कि इन पतंगों की तरह यह जिंदगी तो हमारी है, लेकिन क्या अपनी इस जिंदगी के मालिक भी हम ही हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि हमने अपने जीवन की डोर किसी और के हाथ में सौंप रखी है और वही हमारी जिंदगी को जैसा चाह रहा है, चला रहा है। मैं दावे से कह सकता हूं कि यदि आप मेरे इस बात पर थोड़ा सा यकीन करके सोचना शुरू करेंगे तो चौक जाएंगे 'अरे, यह क्या हो रहा है।

हमारी पतंग को चलाने वाले हाथ आपको मिलेंगे। (1) अतीत की स्मृतियों के (2) भविष्य के सपनों के (3) सड़ी - गली मान्यताओं और पुरानी शुष्क परंपराओं के (4) उच्च पद और लाभ जैसे अपने स्वार्थ के (5) बॉस के साथ - साथ और भी न जाने किस - किसके।

हर कोई यही कहता है कि 'मैं क्या कर सकता हूं। मैं इसके लिए मजबूर हूं।' लेकिन मैं कहता हूं कि 'यदि आप अपनी ही पतंग के बारे में कुछ नहीं कर सकते हैं, तो फिर क्या दूसरों की पतंगों के बारे में करेंगे? यह ठीक है कि दूसरों की डोरों को छीनने की होड़ लगी हुई है, लेकिन यह हम ही तो हैं, जो अपनी डोर को उन्हें सौंप देते हैं, अपनी सुविधा के लिए अपनी पसंद की उड़ान भरे बिना जिंदगी का सच्चा लुत्फ कैसे मिल सकता है।

चण्डीगढ़ में माता पिता सम्बन्धी विशेष सभा

माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में गुरू महाराज की शिक्षा अनुसार 25 जनवरी इतवार को हमेशा की तरह श्रीमान बलदेव सिंह जी के निवास स्थान 3154 सैक्टर 21-डी में सुबह 9.30 बजे सभा रखी गई। इसकी सूचना पहले इतवार को दे दी गई थी। अबोधता के कारण यह सभा निधारित तिथि पर नहीं की जा सकी।

इसमें खेड़ा साहिब, शशी जी, एकता जी, जगदीष प्रसाद, जलधर जी, उसकी माता जी वा सपुत्र, मधुसूदन जी, मैडम किरन जी और उनके पिता, प्रेमा जी वा उनकी बेटी, श्रीमान ऐल. वी. शर्मा जी, चमन जी वा उनके बच्चे उपस्थित थे।

सबसे पहले जगदीष जी ने "अद्वितीय है रूप तुम्हारा जन समाज में हे भगवान" नामक भजन गाया। गुरू महाराज का छवि द्वारा अर्चन करके देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। फिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रद्धा भाव से गुरू महाराज के दरबार में सहाय प्रार्थना की। "फिर जगदीष जी ने "श्रद्धा भाजन माता पिता जी" नामक भजन हाजरीन के साथ मिलकर गाया।

फिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि गुरू महाराज का आर्विभाव वा कारज निराला है, उसको समझना महा कठिन है। परन्तु उससे जुड़कर अनन्त बरकतें मिलती हैं।

गुरू महाराज ने फरमाया कि "मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग चाहता हूँ" किसी धर्म संस्थापक ने यह शब्द इससे पहले नहीं कहे। गुरू महाराज ने सम्बन्धों में नर्क को देखा और दूर किया।

माता पिता के सम्बन्ध में जो विश्व में घोर नर्क फैला हुआ है, वह घटनाओं के द्वारा चित्रित किया गया। यह बताया गया कि मनुष्य पशुओं से आया है और वह पशुवृति रखता है। मनुष्य मूल से स्वार्थी है और स्वार्थ उसे वहशी बना देता है। स्वार्थ के कारण माता पिता जैसे उपकारी वा स्वार्गीय जीव को भी वह नहीं देख सकता, माता पिता को पूजने की जगह सताने वाला बन जाता है। मनुष्य के इस वहशीपन को दिखाने और इस सम्बन्ध को स्वर्गीय बनाने का पूजनीय भगवान का कारज है।

जैसे बिल्ली को हमेशा के लिए चूहे खाने से हटाना, उनका मित्र बनाना असम्भव है, उसी प्रकार वहशी, गंवार, मूर्ख वा पागल सन्तान को माता पिता का रूप दिखाना, उनके प्रति सेवा वा श्रद्धा के साधनों में लगाना किसी गुरू पीर के लिए भी नामुमकिन है। परन्तु पूजनीय भगवान ऐसी समर्थ्य और विलक्षण योग्यता रखते हैं, जिससे उन्होंने यह नामुमकिन काम करने का बीड़ा उठाया है और इस पृथ्वी पर सचमुच स्वर्ग लाने का सूत्रपात किया है।

पूजनीय भगवान ने अपने अमूल्य देव प्रभावों के द्वारा एक एक वहशी सन्तान का वहशीपन दूर करके अपने माता पिता का सुन्दर महान उपकारी और जां निस्सार करने वाला रूप दिखाया है। सच्चा स्वर्ग पैदा किया है। उनकी सुन्दर जिन्दा घटनाओं का वर्णन किया। सभापति जी भावों से उद्वेलित होकर आंखों में आंसुओं के साथ जब ब्यान कर रहे थे तो हृदय माता पिता के अति महान, उपकारी, जां निस्सार करने वाले रूप के आगे झुक रहे थे, बहुत प्रभाव दायक वातावरण

बन रहा था।

सभापति जी ने आगे बताया कि एक-एक मां को अपनी सन्तान के शरीर का, फिर उन्हें पढ़ाने लिखाने, सुन्दर वस्त्र पहनाने का तो फिकर रहता है, परन्तु अपनी सन्तान को जीवन रक्षक और परम विकासक वातावरण के साथ, विशेषकर जो परम पूजनीय भगवान की शरण में आने से मिलता है, उसकी कोई अवश्यकता नहीं रहती। जैसे जीने के लिए आक्सीजन की अवश्यकता है, उसी प्रकार गुरू महाराज के देव प्रभावों के वातावरण की अवश्यकता है। बड़े महान हैं वह माता पिता जिन्हें अपनी सन्तान को इस अमृत के कुण्ड से जोड़ने का फिकर रहता है।

हमें जो इस अमृत कुण्ड से माता पिता ने जोड़ा है, उस उपकार को देखते रहने की अवश्यकता है।

उसके बाद सौभाग्यवान सन्तानों ने फूलों के हारों के द्वारा अपने-अपने पिता का अर्चन किया और प्रणाम का साधन किया, बड़ा स्वर्गीय दृष्य था।

150 रू० भेंट स्वरूप प्राप्त हुए। आखिर में जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई। कई सौभाग्यवान जनों ने हार घर पर ले जाकर प्रणाम का साधन किया। पूजनीय भगवान को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया, जो ऐसे स्वर्गीय साधन प्रदान करते हैं।

एक हाजरीन

शुभ संग्राम

डबवाली :- 13.1.09 की सुबह श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान जगदीष प्रसाद जी चण्डीगढ़ से डबवाली की ओर रवाना हुए। दोपहर तक संगरूर पहुंचे। वहां कुछ समय श्रीमान सीताराम जी के परिवार को मिले और श्रीमान सीता राम जी भी साथ शामिल हो गए। रास्ते में भुच्चो चौक से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को मिले और उन्हें प्रोग्राम की जानकारी दी। शाम तक यह पार्टी डबवाली मण्डी में देव धर्म मिशन के मन्दिर में पहुंची। 13 और 14 जनवरी को यहां ठहरकर कई प्रकार का शुभ संग्राम किया। एक दो जनों को पढ़ने के लिए साहित्य भी दिया। एक भद्र जन प्रतिदिन मन्दिर में आकर माथा टेककर जाते हैं, उनके साथ हितकर बातचीत हुई। मन्दिर और चारदिवारी के गेटों की कुछ थोड़ी बहुत मुरम्मत करवाई गई।

थराजवाला :- 14 जनवरी को यहां पहुंचकर यहां सत्संग रखने का विचार किया और कल्याण सत्संग पर पहुंचने के लिए प्रेरणा की।

गोनियाना मण्डी :- थराजवाल से श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंचे। रात को हमेशा की तरह ज्ञान चन्द जी के ग्रह में सभा रखी गई। सभा में अच्छी हाज़री थी। महिमा सवाई से श्री हरिन्द्र सिंह जी और उनके पिता भी सभा में पहुंचे। नये सेवक बने हैडमास्टर साहिब हरबंस लाल का सारा परिवार, ज्ञान चन्द जी का सारा परिवार और स्थानीय सत्संगी भी आ गए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

इस सभा में बताया गया कि मनुष्य अपने वातावरण से बहुत तीव्रता से प्रभावित होता है। वातावरण ही मनुष्य की सोच समझ और कदर कीमतों को र्निधारित करता है। वातावरण को चीरकर मनुष्य नया ज्ञान पाने के योग्य नहीं रहता। गुरू महाराज की रोशनी अधिकारी मनुष्यों को वातावरण के प्रबल प्रभावों का ज्ञान देती है। उसको भलाई और तबाही के मार्ग का अन्तर बताती है। पूजनीय भगवान के देव प्रभावों के वातावरण की सच्ची घटनाएं पेश की गई। हाजरीन

काफी प्रभावित हुए।

15.1.09 को फिर एक सभा हुई। इसमें सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य बहुत सी योग्यताएं रखकर, ज्ञान रखकर, भिन्न पक्षों में बेसुध रहता है।

आत्मिक हानि लाभ से बेसुधि जीवन बर्बाद कर देती है। गुरू महाराज के प्रभावों द्वारा भिन्न पक्षों में इस आत्मिक बेसुधि दूर करने की बहुत सुन्दर उदाहरणें पेश की। सभा से कई जनों को लाभ हुआ।

शाम तक श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पहुंच गए। दोनों धर्म सम्बन्धी श्रीमान बाबू राम जी का पता लेने गए, जो कमजोरी के कारण बिस्तर पर पड़े हुए हैं।

15.1.09 की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति के बिना सारे विश्व में अन्ध कार है। इसी कारण महान उपलब्धियां प्राप्त करने वाले व्यक्ति बुरे हशर को प्राप्त होते हैं और अपने अस्तित्व की महा हानि कर लेते हैं। इसी अन्धकार के कारण हमारे सम्बन्ध ठीक नहीं रहते। माता पिता का उपकारी रूप महान है, सुन्दर और कल्याणकारी है, यह छुपा रहता है। इस सम्बन्ध में मनुष्य महा अनर्थ और पाप करने के लिए मजबूर हो जाता है। पूजनीय भगवान ने और सम्बन्धों के भिन्न इस सम्बन्ध में रोशनी प्रदान करके आज्ञाकारी वा सेवाकारी सन्तान पैदा की है। अनेक जनों ने इस सम्बन्ध में जो विकार पैदा कर लिया था, उन्होंने पश्चाताप वा परिशोध करके आत्मिक शुद्धि प्राप्त की है। यह दर धर्म का सच्चा द्वार है और विश्व में सबसे कीमती वस्तु है। हम इस सच्चाई को जानकर रोशनी में जी सकें।

16 जनवरी की एक और सभा हुई जो भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई।

कल्याण :- 16 फरवरी की रात को एक सभा हुई। 17 जनवरी की सुबह 8 बजे एक सभा रखी गई। इसमें श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि धर्म क्या है? अच्छा और नेक बनना धर्म है, परन्तु नेक कैसे बनें यह पता नहीं। नेक बनने का पता दूसरों के साथ सम्बन्ध कैसे हैं, इससे पता लगता है। हर मनुष्य अपने आपको अच्छा समझता है, यह भुलेखा हमें अच्छा बनने नहीं देता। यदि आप अच्छे बेटे, अच्छे पड़ोसी, अच्छे भाई, पिता, अच्छे मालिक वा अच्छे नौकर हों, तो आपके व्यवहार इसकी पुष्टि करेंगे। अच्छे भाव पैदा करके ही अच्छे बना जा सकता है और धर्म आता है। अच्छे न बनने से दुख मिलते हैं और धीरे-धीरे विनाश होता है।

चण्डीगढ़ में प्रत्येक इतवार को सभा होती है, जो अक्सर श्रीमान बलदेव सिंह जी करवाते हैं। 25 जनवरी को माता पिता के सम्बन्ध में सभा हुई।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts